

[A-36] Seat No: _____

No. of Printed Pages: 02

Sardar Patel University

M. A. (Final) (External) Examination

Thursday Date: 19/04/2018 Time: 02.00 P.M. to 05.00 P.M.

Subject Code: SAN-507 PAPER-VII

Total Marks: 100

(१) वेद (नियत सूक्तानि)

(२) महाभारत-विराटपर्व।

प्रश्न: १ गमे ते ऋषि ऋष्याओनो सटीप्पण अनुवाद करो:

(१२)

१. नासत्याभ्यां बर्हीरिव प्र वृञ्जे स्तोमाँ इयर्म्यभ्रियेव वातः।

यावर्भगाय विमदाय जायां सेनाजुवा न्यूयतू रथेन॥ (ऋग्वेद १/११६/१)

२. रमध्वं मे वचसे सोम्याय ऋतावरीरुप मुहूर्तमेवैः।

प्र सिन्धुमच्छा बृहती मनीषावस्युरह्वे कुशिकस्य सूनुः॥ (ऋग्वेद ३/३३/५)

३. ये देवास इह स्थन विश्वे वैश्वानरा उत।

अस्मभ्यं शर्म सप्रथो गवेऽश्वाय यच्छत॥ (ऋग्वेद ८/३०/४)

४. इदं देवा शृणुत ये यज्ञिया स्थ भरद्वाजो मह्यमुक्थानि शंसति।

पाशे स बद्धो दुरिते नि युज्यतां यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति॥ (अथर्ववेद २/१२/२)

५. एषामहं समासीनानां वर्चो विज्ञानमाददे।

अस्याः सर्वस्याः संसदो मामिन्द्र भगिनं कृणु॥ (अथर्ववेद ७/१२/३)

६. इयं नारी पतिलोकं वृणाना नि पद्यत उप त्वा मर्त्यं प्रेतम्।

धर्मं पुराणमनुपालयन्ती तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धेहि॥ (अथर्ववेद १८/३/१)

प्रश्न: २ वैदिक देवताओ विशेष विचारण करी छन्ददेवता विशेष सविस्तर नोध लभो

(१२)

अथवा

प्रश्न: २ नीचेना विशेष समीक्षात्मक नोध लभो

(१२)

१. उपसू (ऋग्वेद ५/८०)नुं रसदर्शन

२. ऋग्वेदनो परियय आपो

प्रश्न: ३ काल सूक्त विशेष सविस्तर नोध लभो

(१०)

अथवा

प्रश्न: ३ शतपथब्राह्मण विशेष नोध लभो

(१०)

प्रश्न: ४ नीचेनामांथी गमे ते बे विशेष समीक्षात्मक नोध लभो

(१६)

१. शिवसंकल्पसूक्त

२. प्रात्य (अथर्ववेद १५/१) विशेष नोध लभो

३. शालानिर्माण (अथर्ववेद ३/१२) विशेष नोध लभो

४. राष्ट्रसत्तासूक्त (अथर्ववेद ७/१२) विशेष नोध लभो

[P.T.0]

प्रश्न: ५ गभे ते त्रश श्लोकोनो नोध सलित अनुवाढ करो:

(१८)

१. वैडूर्यान्काञ्चनान्दानान्फलैर्ज्योतिरसैः सह।
कृष्णाक्षाँल्लोहिताक्षांश्च निर्वत्स्यामि मनोरमान्॥१/२१॥
२. नास्य यानं न पर्यं न पीठं न गजं रथम्।
आरोहेत्सम्मतोऽस्मीति स राजवसतिं वसेत्॥४/१०॥
३. क्षिप्रं हि गावो बहुला भवन्ति न तासु रोगो भवतीह कश्चित्।
तैस्तैरुपायैर्विदितं ममैतदेतानि शिल्पानि मयि स्थितानि॥९/१२॥
४. सुकन्या नाम शार्याती भार्गवं च्यवनं वने।
वल्मीकभूतं शाम्यन्तमन्वपद्यत भामिनी॥२०/०७॥
५. यत्सभायां स्म पाञ्चालीं क्लिश्यमानां दुरात्मभिः।
दृष्टवानसि तस्याद्य फलमाप्नुहि केवलम्॥५५/४॥
६. किं तेन द्यूतेन राजेन्द्र बहुदोषेण मानद।
देवेन बहवो दोषोस्तस्मात् तत् परिवर्जयेत्॥६६/३३॥

प्रश्न: ६ परवर्ती ग्रन्थो उपर महाभारतना प्रभाव विशे विस्तृत नोध लभो

(१६)

अथवा

प्रश्न: ६ महाभारतनी समीक्षित आवृत्ति विशे विस्तृत नोध लभो

(१६)

प्रश्न: ७ कीचकवधपर्व विशे सविस्तर नोध लभो

(१६)

अथवा

प्रश्न: ७ पांडवोनी अज्ञातवासनी योजना अने तेनां कार्योनु निरूपण करो

(१६)